NCERT SOLUTIONS

CLASS - 12th



aglasem.com

Class : 12th
Subject : History
Chapter : 6
Chapter Name : भक्ति सूफी परम्पराएँ - धार्मिक विश्वासों में बदलाव और श्रद्धा ग्रंथ

Q1 उदाहरण सहित बताएं कि सम्प्रदाय के समन्वय से इतिहासकार क्या अर्थ निकलते है?

Answer. इस चरण को मूर्तिकला के साथ-साथ ग्रंथों में भगवान और देवी-देवताओं की बढ़ती दृश्यता द्वारा चिह्नित किया गया था। देवी-देवताओं की विविध रूपों में पूजा की जाती थी। काम पर दो प्रक्रियाएँ थीं - एक ब्राह्मणवादी विचारों के प्रसार की प्रक्रिया थी। यह सरल संस्कृत पद्य में पुराण ग्रंथों की रचना, संकलन और संरक्षण से स्पष्ट है, इसका मतलब स्पष्ट रूप से महिलाओं और शूद्रों के लिए सुलभ होना था, जिन्हें आमतौर पर वैदिक शिक्षा से बाहर रखा गया था। इसी समय, काम पर एक दूसरी प्रक्रिया थी - ब्राह्मण द्वारा इन और अन्य सामाजिक श्रेणियों की मान्यताओं और प्रथाओं को स्वीकार करने और पुन: काम करने के लिए। इस प्रक्रिया का सबसे स्पष्ट उदाहरण उड़ीसा के पुरी में स्पष्ट है, जहां सिद्धांत देवता की पहचान विष्णु के एक रूप जगन्नाथ के रूप में की गई थी। एकीकरण के ऐसे उदाहरण देवी-देवताओं के बीच भी स्पष्ट हैं।

Page : 168 , Block Name : Short Answer

Q2 आपको क्या लगता है कि उपमहाद्वीप में मस्जिद की वास्तुकला सार्वभौमिक आदर्शों और स्थानीय परंपराओं के संयोजन को दर्शाती है?

Answer. उपमहाद्वीप में मस्जिद की वास्तुकला की विशेषताएं स्थानीय परंपराओं के साथ एक सार्वभौमिक विश्वास के जटिल मिश्रण को दर्शाती हैं। कुछ विशेषताएं सार्वभौमिक हैं जैसे कि मस्जिद का उन्मुखीकरण मक्का की ओर है, जो मिह्राब (प्रार्थना आला) और मिनबार (पल्पिट) के स्थान पर स्पष्ट है। हालांकि, कई विशेषताएं हैं जो छत और निर्माण सामग्री जैसी विविधताएं दिखाती हैं।

Page : 168 , Block Name : Short Answer

Q3 बे शरीया और बा शरीया सूफी परंपराओं के बीच समानताएं और अंतर क्या थे?

Answer. शरिया मुस्लिम समुदाय को नियंत्रित करने वाला कानून है। यह कुरान और हदीस, पैगंबर मुहम्मद की शिक्षाओं पर आधारित है। धार्मिक-विचारधारा वाले लोगों का एक समूह था, जिसे सूफियों ने एक धार्मिक और राजनीतिक संस्था के रूप में खिलाफत के बढ़ते भौतिकवाद के विरोध में तप और रहस्यवाद में बदल दिया। कुछ मनीषियों ने सूफी आदर्शों की आमूल व्याख्या के आधार पर आंदोलनों की शुरुआत की। वे मेंडिसिटी में चले गए और तप के चरम रूपों का अवलोकन किया। उन्होंने शरीया की अवहेलना की और उन्हें बे शरीया के नाम से जाना गया। दूसरी ओर, जो लोग शरीया के नियमों का पालन करते थे, उन्हें बा शरीया के नाम से जाना जाता था।

Page : 168 , Block Name : Short Answer

Q4 उन तरीकों पर चर्चा करें जिनमें अलवार, नयनार और वीरशैव जाति व्यवस्था की आलोचना करते थे।
Answer. साठवीं शताब्दी में सबसे पहले भक्ति आंदोलनों का नेतृत्व अलवार और नयनार ने किया था। अलवार विष्णु के भक्त थे और नयनार शिव के भक्त थे। वे अपने देवताओं की प्रशंसा में तमिल में भजन गाने के लिए

जगह-जगह से यात्रा करते थे। कुछ इतिहासकारों का मत है कि अलवार और नयनारों ने जाति व्यवस्था और ब्राह्मणों के प्रभुत्व के विरोध में आंदोलन शुरू किया या कम से कम व्यवस्था में सुधार करने का प्रयास किया। ब्राह्मणों से लेकर कारीगरों और काश्तकारों तक और यहां तक कि अछूत मानी जाने वाली जातियों से लेकर विविध सामाजिक पृष्ठभूमि वाले भक्तों ने भी आवाज़ उठाई। कर्नाटक में बारहवीं शताब्दी में वीरशैव परंपरा का उदय हुआ। इसका नेतृत्व बसवन्ना (1106-68) नाम के एक ब्राह्मण ने किया था जो चालुक्य राजा के दरबार में एक मंत्री था। उनके अनुयायियों को वीरशिव (शिव के नायक) या लिंगायत (लिंग के पहनने वाले) के रूप में जाना जाता था। उन्होंने जाति के विचार को चुनौती दी और ब्राह्मणों ने कुछ समूहों को प्रदूषण के लिए जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने पुनर्जन्म के सिद्धांत पर भी सवाल उठाया। लिंगायतों ने धर्मशास्त्रों द्वारा अस्वीकृत कुछ प्रथाओं को भी प्रोत्साहित किया, जैसे कि यौवन के बाद की शादी और विधवा पुनर्विवाह।

Page : 168 , Block Name : Short Answer

Q5 कबीर या बाबा गुरु नानक के प्रमुख उपदेशो का वर्णन करें और इन तरीकों को किस प्रकार प्रेषित किया गया।

Answer. कबीर एक हिंदू पैदा हुए थे लेकिन एक गरीब मुस्लिम बुनकर द्वारा उठाए गए थे। उन्हें गुरु रामचंद्र द्वारा भक्ति में दीक्षा दी गई थी।
उनके उपदेश इस प्रकार है -
→ उन्होंने ईश्वर को निराकार बताया। उन्होंने परम वास्तविकता का वर्णन करने के लिए परंपरा की सीमा खींची। उन्होंने इस्लाम से अल्लाह, खुदा, हजरत और पीर जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया। उन्होंने वैदिक परंपराओं से प्राप्त शब्दों का भी प्रयोग किया, जैसे अलख (अनदेखी), निरंकार (निराकार), ब्रह्म, आत्मान आदि।
→ वह मूर्तिपूजा के विरुद्ध था।
→ वह बहुदेववाद के खिलाफ था और एकेश्वरवाद के विचार का समर्थन करता था।
→ वह इस धारणा के थे कि ईश्वर एक है, लेकिन विभिन्न नामों से पुकारा जाता है।
→ उनकी शिक्षाएँ और विचार स्पष्ट थे। सूफ़ियों और योगियों की परंपराओं के साथ बातचीत और बहस के माध्यम से उनके विचार एकीकृत हुए।

बाबा गुरु नानक का जन्म 1469 में ननकाना साहिब में एक हिंदू व्यापारी परिवार में हुआ था। उन्होंने अपना अधिकांश समय सूफी और भक्तों के बीच बिताया।
उनके उपदेश इस प्रकार है -
→ उन्होंने निर्गुण भक्ति के एक रूप की वकालत की। उन्होंने अपने आस-पास देखे गए धर्मों की बाहरी प्रथाओं का खंडन किया।
→ उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों दोनों के त्याग, अनुष्ठान स्नान, छवि पूजा, तपस्या और शास्त्रों को अस्वीकार कर दिया।
→ उन्होंने दिव्य नाम को याद करके और दोहराकर दिव्य से जुड़ने का एक सरल तरीका प्रस्तावित किया।

Page : 168 , Block Name : Short Answer

Q6 सूफीवाद के प्रमुख धर्मिक विश्वासों और प्रथाओं पर चर्चा करें।

Answer. सूफीवाद की प्रमुख मान्यताएँ और प्रथाएँ थीं -
→ सूफी धार्मिक और राजनीतिक संस्थान के रूप में खलीफा के बढ़ते भौतिकवाद के खिलाफ थे।
→ सूफियों ने धर्मशास्त्रियों द्वारा अपनाई गई कुरान और सुन्ना (पैगंबर की परंपराओं) की व्याख्या करने की हठधर्मिता परिभाषाओं और विद्वानों के तरीकों की आलोचना की।

→ सूफियों ने ईश्वर के प्रति तीव्र भक्ति और प्रेम के माध्यम से मोक्ष प्राप्त करने पर जोर दिया।
→ सूफियों ने अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कुरान की व्याख्या मांगी।
→ उन्होंने लोगों को खिलाने के लिए लंगर (एक खुली रसोई) का आयोजन किया। सुबह से लेकर देर रात तक सभी क्षेत्रों के लोग - सैनिक, दास, गायक, व्यापारी, कवि, यात्री, अमीर और गरीब वहाँ आते रहे।
→ गायन और नृत्य उस परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया जिसे पहले इस्लाम में अनुमोदित नहीं किया गया था।
→ सूफियों ने या तो ज़िक्र (दैवीय नामों) को याद करके या समा के माध्यम से अपनी उपस्थिति को प्रकट करते हुए या रहस्यमय संगीत के प्रदर्शन से भगवान को याद किया।

Page : 168 , Block Name : Long Answer

Q7 कैसे और क्यों शासकों ने नयनारों और सूफियों की परंपरा के साथ संबंध स्थापित करने की कोशिश की।

Answer. नयनारों की परंपरा -
नयनार शिव के भक्त थे। छठी शताब्दी में सबसे पहले भक्ति आंदोलनों का नेतृत्व अलवार और नयनार ने किया था। उन्होंने अपने देवताओं की प्रशंसा में तमिल में भजन गाते हुए जगह-जगह से यात्रा की। शक्तिशाली चोल शासकों ने ब्राह्मणवादी और भक्ति परंपराओं का समर्थन किया, भूमि अनुदान बनाया और विष्णु और शिव के लिए मंदिरों का निर्माण किया। कुछ सबसे शानदार शिव मंदिर, जिनमें चिदंबरम, तंजावुर, और गंगाईकोंडचोलापुरम शामिल हैं, का निर्माण चोल शासकों के संरक्षण में किया गया था। चोल राजाओं ने अक्सर दिव्य समर्थन का दावा करने का प्रयास किया और लोगों की भाषा में गाए जाने वाले इन लोकप्रिय संतों के दर्शन को फिर से बनाने के लिए पत्थर और धातु की मूर्तियों से सजी शानदार मंदिरों का निर्माण करके अपनी शक्ति और स्थिति की घोषणा की। इन राजाओं ने शाही संरक्षण के तहत मंदिरों में तमिल शैव भजनों का गायन किया।
सूफियों की परंपरा -
धार्मिक-विचारधारा वाले लोगों का एक समूह जिसे सूफी कहा जाता है, वह धार्मिक और राजनीतिक संस्थान के रूप में खिलाफत के बढ़ते भौतिकवाद के विरोध में तप और रहस्यवाद में बदल गया। सूफी संतों की कब्रों के लिए ज़ियारत नामक तीर्थयात्रा मुस्लिम दुनिया में प्रचलित है। यह अभ्यास सूफ़ी की आध्यात्मिक कृपा पाने का एक अवसर है। मुहम्मद बिन तुगलक तीर्थ यात्रा करने वाला पहला सुल्तान था, लेकिन जल्द से जल्द निर्माण को पंद्रहवीं शताब्दी के अंत में मालवा के सुल्तान ग़यासुद्दीन खिलजी द्वारा वित्त पोषित किया गया था। यहां तक कि अकबर ने अजमेर में मकबरे का दौरा किया। वह वहाँ विजय के लिए आशीर्वाद, मन्नतें पूरी करने और पुत्रों के जन्म के लिए जाता था। सुल्तानों का यह भी मानना था कि औलिया सामान्य मनुष्यों की सामग्री और आध्यात्मिक परिस्थितियों को सुधारने के लिए ईश्वर के साथ हस्तक्षेप कर सकते हैं।

Page : 168 , Block Name : Long Answer

Q8 उदाहरण के साथ विश्लेषण कीजिए कि भक्ति और सूफी चिंतकों ने अपनी राय व्यक्त करने के लिए विभिन्न भाषाओं को क्यों अपनाया।

Answer. भक्ति और सूफी चिंतकों ने अपनी राय व्यक्त करने के लिए विभिन्न भाषाओं को अपनाया क्योंकि भारत में मध्ययुगीन काल में इस्तेमाल होने वाली भाषाएं संस्कृत और फारसी थीं। इन भाषाओं को सभी लोगों को ठीक से नहीं पता था क्योंकि महिलाओं और शूद्रों को संस्कृत में रचित पुरातन ग्रंथों तक पहुंच की अनुमति नहीं थी। इसने उन्हें वैदिक शिक्षा से अलग रखा। भक्ति और सूफी की परंपराएं लोकप्रिय हो गईं क्योंकि कवि-संत नेताओं के रूप में उभरे और इन परंपराओं ने महिलाओं और निचली जातियों को समायोजित किया और स्वीकार किया, जो श्रेणियां रूढ़िवादी ढांचे के भीतर मुक्ति के लिए अयोग्य मानी जाती थीं।

→ दक्षिण भारत के कुछ शुरुआती भक्ति आंदोलनों का नेतृत्व करने वाले अलवार और नयनार ने अपने देवताओं की प्रशंसा में तमिल में भजन गायन के लिए जगह-जगह से यात्रा की।
→ कर्नाटक में वीरशैव परंपरा लोकप्रिय हुई। वीरशैव परंपरा की समझ 'वचन' (कहावत) से ली गई है। इनकी रचना कन्नड़ में हुई थी।
→ सूफी संतों ने लोगों की भाषा हिंदवी में बातचीत की। बाबा फरीद ने स्थानीय भाषा में छंदों की रचना की।
→ कबीर की कविताएँ कई भाषाओं में शेष हैं।
→ बाबा गुरु नानक ने भजनों और शिक्षाओं के माध्यम से अपना संदेश दिया। उनके विचारों को क्षेत्र की भाषा पंजाबी में 'शबद' नामक भजनों के माध्यम से फैलाया गया था।
इस प्रकार हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि भक्ति और सूफी विचारकों ने स्थानीय लोगों से जुड़ने के लिए विभिन्न स्थानीय भाषाओं को अपनाया।

Page : 168 , Block Name : Long Answer

Q9 इस अध्याय में शामिल किसी भी स्रोत को पढ़ें और उनमें व्यक्त किए गए सामाजिक और धार्मिक विचारों पर चर्चा करें

Answer. → चतुर्वेदी (ब्राह्मण चार वेदों में पारंगत) और "बहिष्कृत" (स्रोत -1) - यह टोंडारादिपोडी द्वारा रचित था जो एक ब्राह्मण था, वह एक अलवार था। उपरोक्त स्रोत से हम कह सकते हैं कि अलवार जाति व्यवस्था और ब्राह्मणों के वर्चस्व के खिलाफ थे या कम से कम इस व्यवस्था को सुधारने का प्रयास किया गया।
→ शास्त्र या भक्ति? (स्रोत -2) - यह अप्पार द्वारा रचित एक श्लोक है, जो एक नयनार संत है। नयनारों ने दावा किया कि उनकी रचनाएँ वेदों की तरह महत्वपूर्ण थीं।
→ कराईकल अम्माईयर (स्रोत -3) की कांस्य छवि - शिव के भक्त, करिककल अम्मैयार ने अपने लक्ष्य को पाने के लिए अत्यधिक तपस्या का मार्ग अपनाया। उनकी रचनाएँ नयनार परंपरा के भीतर संरक्षित थीं।
→ शाही उपहार की घोषणा (स्रोत -9) - यह एक सूफी पाठ का एक अंश है जो शेख निज़ामुद्दीन औलिया की धर्मशाला में कार्यवाही का वर्णन करता है। इस अंश से पता चलता है कि सूफियों ने सांसारिक शक्तियों और कब्जों से दूरी बनाए रखी। → एक प्रभु (स्रोत -10) - यह कबीर के लिए एक रचना है। इससे पता चलता है कि कबीर ने एक ईश्वर के विचार का प्रचार किया जिसे विभिन्न नामों से पुकारा जाता है।

Page : 168 , Block Name : Long Answer

Q10 भारत के रूपरेखा मानचित्र पर, तीन प्रमुख सूफी मंदिर, और मंदिर से जुड़े तीन स्थान (विष्णु, शिव और देवी का एक-एक रूप) देखें।

Answer. तीन प्रमुख सूफी मंदिर हैं - लाहौर, दिल्ली और अजमेर।
विष्णु, शिव और देवी मंदिर से जुड़े तीन स्थान हैं - तिरुपति, तंजावुर और मदुरै।

Page : 168 , Block Name : Map Work


Lahore
(Data Ganj
Bakhsh)
Delhi
(Shaikh Nizamuddin Auliya)
Ajmer
(Shaikh Muinuddin
Chisti)
Tirupati
Thanjavur
(Madurai)

aglasem.com